MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

One Day National Interdisciplinary Conference 28 April 2023

Organized by Rayat Shikshan Sanstha'sProf. Dr. N.D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)

Rayat Shikshan Sanstha's

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)

One Day National Interdisciplinary Conference

On

Literary Trends and Issues in 21st Century

Friday, 28 April 2023

Organized by

Departments of Marathi, Hindi, English, and IQAC

Chief Editor: - Dr. Gholap Bapu Ganpat

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
28th April 2023

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 9.154 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. CERTIFIED QUALITY MANAGEMENT SYSTEM ISO 9001:2015 International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

CamScanner

Our Patrons

Hon. Shri. Sharadchandra Pawar

President, Rayat Shikshan Sanstha, Satara

Hon. Dr. Anil Patil

Chairman, Rayat Shikshan Sanstha, Satara

Hon. Prin. Dr. Vitthal Shivankar

Secretary, Rayat Shikshan Sanstha, Satara

Hon. Prin. Dr. Shivling Menkudale

Joint Secretary, Rayat Shikshan Sanstha, Satara

Hon. Dr. Yashwant Thorat

Member, Managing Council, Rayat Shikshan Sanstha, Satara

Hon. Saroj Patil (Mai)

Member, Managing Council, Rayat Shikshan Sanstha, Satara

Organizing Committee

President	IQAC Coordinator	Convener	Coordinator
Prin. Dr. T.N. Gholap	Dr. S.B.Pore	Dr. B. A. Sutar	Prof. S.K. Shaikh

Co-Coordinators

Dr. S. K. Khot 8830111509 (Hindi) Prof. S.N.Chavan 9850255584 (English) Smt. Phadtare S. S

Members

Prof. Patil N. M. Dr.Adnaik N. S Prof. Giri C.S. Prof. Dr. Bansode S.P. Dr.Sutar R.S.

Prof. Bhandare S.A. Mr.Kamble M.D.

CamScanner

1.	श्री. अनिल विठ्ठल मकर	इंटरनेट के युग में पत्रकारिता का बदलता रूप	07
2.	प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	अपने दायित्व से भटकती पत्रकारिता	11
3.	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव,	'गुलाम मंडी' उपन्यास में आधुनिकता की चकाचौंध में दम तोड़ती सामाजिक संवेदना	15
4.	प्रा. आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी	मधु कांकरिया के साहित्य में नारी चित्रण	19
5.	प्रा. वैभव दत्तात्रय भालेकर	मन्नू भंडारी स्त्री मन की अभिव्यक्ति	25
6.	डॉ.प्रमोद परदेशी	डॉ सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के नाटकों में नारी विमर्श	28
7.	डॉ.अलका निकम वागदरे	इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में नारी का चित्रण (नयी सदी के स्वर के संदर्भ में)	32
8.	जहाँगीर स. शेख	"दक्खिनी हिंदी मुस्लीम लोकगीतों में नारी का चित्रण"	37
9.	प्रा.बाबासाहेब तुकाराम साबले	इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन की संवेदनात्मक अध्ययन'	48
10.	प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे	'असगर वजाहत के नाटकों में सामाजिक संवेदना'	52
11.	प्रो,अमोल तुकाराम पाटिल	इक्कीसवीं सदी के उपन्यास में चित्रित नारी	57
12.	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में किन्नर विमर्श	60
13.	प्रा. वसंत काम्बले	दलित विमर्श की सशक्त अभिव्यक्ति आत्मकथा	71
14.	प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील	इक्कीसवी सदी के साहित्य में सामाजिक संवेदना की दृष्टि"	74
15.	रूपाली संभाजी पाटिल.	डॉ राजेंद्र मोहन भटनागर रचित जीवनी 'शहादत' में नारी	77
16.	सतीश कृष्णात पाटील-कोले	21वीं सदी की महिला उपन्यासकारऔर उनका आधुनिकतावादी विचार	82
17.	अर्चना वसंत तराल	रजनी गुप्त के उपन्यास में चित्रित नारी के विविध रूप	86
18.	श्रीमती स्मिता अभिजित वनिरे	21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में पत्रकारिता का बदलता स्वरुप	89
19.	डॉ.अशोक मरळे	आंबेडकरवादी विचारधारा और 21 वी सदी की हिंदी दलित कविता	92

CamScanner

डॉ सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के नाटकों में नारी विमर्श

डॉ.प्रमोद परदेशी
दादा पाटील महाविद्यालय कर्जत
जि.अहमदनगर

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति तथा समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उसके समाज में होनेवाले अस्तित्व एवं अनन्य साधारण महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। नारी समाज की बुनियाद है। नारी के सामाजिक महत्त्व के बारे में डॉ. घनश्याम भुतड़ा ने कहा है, "भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। संसार में यदि नारी न होती, तो सभ्यता और संस्कृति ही न होती। अपने विविध रूपों में नारी ने पुरुषों को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है। वह समाज में पुरुषों के लिए कभी जन्मदात्री, पोषणकर्ती माता के रूप में आती है, तो कभी स्नेह की भावधारा में प्रवाहित करनेवाली भगिनी के रूप में लक्षित होती है। अत: समाज में माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी, सपत्नी, सेविका, परिचारिका, तपस्विनी आदि अनेकानेक रुप है। धार्मिक दृष्टि से वह रमा, जगदम्बा, लक्ष्मी, सरस्वति, श्री आदि रूपों में श्रद्धा एवं पूज्यभाव से युक्त होती है। राजनीतिक दृष्टि से नारी योद्धा, कुटनीतिज्ञ, शासिका तथा दासी आदि रूपों में दिखाई देती है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से स्वकीया, परकीया, वासक सज्जा, प्रेषित–पतिका आदि अनेक रूपों में देखी जाती है।"[१] भारत की नारी ने अपने त्याग और बलिदान की भावना से समाज के सभी घटकों को प्रभावित किया है। उसने हमेशा कष्ट एवं दु:ख झेलकर पुरुषों का साथ दिया है। डॉ. शीलप्रभा के अनुसार, "नारी केवल मांस–पिण्ड की संज्ञा नहीं है। आदिकाल से लेकर आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सफल बनाना, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षयशील भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है।"[२] स्वतंत्रता के बाद अनेक क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ। नारी शिक्षा के कारण भारतीय नारी चेतना में पर्याप्त परिवर्तन आया। "सामाजिक दृष्टि से देखें तो भारत की स्वतंत्रता के बाद से होनेवाले सबसे अधिक सारभूत और उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक है, नारी समाज की अपेक्षित मुक्ति.... घर की चार दीवारियों से निकलकर उसका बाहरी दुनिया में शामिल होना। खास स्वतंत्रता के बाद की बदली हुई सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई। नई हालातों के फलस्वरूप इनके लिए समानता की अभिव्यक्ति और उसके प्रतिष्ठा के नये मार्ग खुल गये।"[३] आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण नारी पुरुषों के समान अनेक क्षेत्रों में काम करने लगी है। विकास का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ नारी ने कदम न रखा हो। प्रशासन, विज्ञान, शिक्षा, तकनीक, जनसंचार, चिकित्सा, अंतरिक्ष आदि किसी भी क्षेत्र में नारी आज पुरुष से पीछे नहीं है। राष्ट्रीय स्तर से आन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक नारी का कार्यक्षेत्र बन गया है। आज नारी स्वावलंबी बन गयी है। आज का युग नारी–पुरुष समानता का युग कहा जाता है। आज नारी समाज में पुरुषों के समान ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कार्य कर रही है। "आज की नारी केवल प्रेम, बनावाटी रोमांस, सौंदर्य या अर्थ स्वातंत्र्य पर सफल जीवन व्यतीत करना चाहती है। कुछ नारियाँ पुरुष वर्ग से हटकर किसी के भी नियंत्रण में रहकर अपना जीवन व्यतीत करना नहीं चाहती। वे नारी सुलभ मधुर वृत्तियों से वंचित हो जाती, अपितु पुरुष की तरह स्वच्छंदता का उपयोग कर अपने मधुमय जीवन को विषमय बनाने लगी है।"[४] समानता के जोश में वह पर्दे से बाहर निकलकर पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने लगी है। आज के महिला जागरण के युग में नारी के खान–पान, लेन–देन, रहन–सहन, आचार–विचारों में काफी परिवर्तन हुआ है। नैतिकता के बंधन ढ़ीले पड़ गये हैं। वह स्वतंत्र होकर अपना जीवनयापन करने लगी है।

डॉ.सुरेश शुक्ल चंद्र २१ वीं सदी के संवेदनशील एवं सशक्त नाटककार है। डॉ. चन्द्र ने नाटक साहित्य में समाज में घटित अनेक प्रसंगों का चित्राकंन किया है। इन घटित सामाजिक प्रसंगों में नारी की स्थिति दर्शनीय है। डॉ. चन्द्र के नाटकों में यह नारी की अलग–अलग समस्याओं एवं स्थितियों का चित्रण है।

डॉ. चन्द्र के 'भावना के पीछे' नाटक में आधुनिक नारी का चित्रण अंकित है। आज के आधुनिक वैज्ञानिक प्रगतिवादी युग की विकसित नयी संस्कृति के माहौल में आधुनिक पत्नी रेखा की विद्रोही वृत्ति और नयी सोच है। रेखा इण्टरमीड़िएट उत्तीर्ण नौकरी करनेवाली एक नारी है। उसका पति अखिलेश बेरोजगार है। रेखा पारंपारिक तौर–तरीके नहीं मानती। अपने स्वयं के घर में भी वह काम करना अपनी सोच के विरुद्ध मानती है। इसलिए घर के काम पति से करवाती है। वह पुरुषों के वर्चस्व और स्वतंत्रता को पसंद नहीं करती। इसलिए वह अपने पति

CamScanner

अखिलेश से कहती है, "मैं पुरुषों की स्वतंत्रता पसंद नहीं करती। पुरुष बड़े चालबाज होतें हैं। अगर मैंने तुम्हें कभी बाहर जाते देख लिया तो उसी दिन घर से बाहर निकाल दूँगी।"[४] रेखा स्वयं खुलकर स्वतंत्रता का उपभोग करती है। अपने पति के सामने ही वह अपने प्रेमी उमेश से इश्क करती है। बाहर अकेली घूमती और गुलछेर्रे उड़ाती है। उमेश के सामने ही पति अखिलेश को अपमानित करती है। अंत में वह आत्महत्या कर लेती है।'भावना के पीछे' नाटक में आधुनिक शिक्षित नारी के लिए मध्यम अनुशासन और पुरुष–संरक्षण परम्परा विहित है। नाटककार डॉ. चन्द्र ने इसी पक्ष पर प्रकाश ड़ाला है। युवावस्था में नारी पूर्ण स्वतंत्रता को न झेल सकती है, न उसका निर्वाह कर सकती है। वह स्वभावत: भावुक और प्रेम की प्रतिमा होती है लेकिन जीवन एक कठोर यथार्थ और व्यावहारिक संघर्ष है। अपने पैरों पर खड़ी होने परिवार का भरण–पोषण करने का भाव और अहंकार के कारण आधुनिक समाज की नारी रेखा अपने आपको अधिकार सम्पन्न पुरुषों से कम नहीं समझती। इस भावावेश में वह रह जाती है और अपने किये का फल पाती है, पश्चाताप की अग्नि में झुलसकर आत्महत्या करती है।

डॉ. चन्द्र के 'शादी का चक्कर' नाटक में नाटक का केंद्रिय पात्र मोहिनी समाज की ऐसी नारी है, जो घर में पौरुषी वर्चस्व को नहीं मानती। अपना पति रतन कुरूप तथा एक आँख से काना है यह बात जब उसे पता चलती है तब अपना मनमानी कारोभार करती है। मोहिनी रतन से पुरुष प्रधान संस्कृति का अस्विकार करते हुए कहती है, "तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी दासी बनकर रहूँ, तुम्हारे इशारों पर नाचूँ, यह कैसे सम्भव है? तुम्हारी मान्यता पर चलनेवाली नारियों के दिन अब शताब्दियों पीछे छूट गये। आज की नारी के साथ यह सब नही चलेगा।"[५] मोहिनी समाज की चालबाज नारी है। वह विवाह कराकर लुटनेवाले गिरोह से जुड़ी हुई है। मोहिनी का रतन के साथ पाँचवा विवाह हुआ था। रतन मोहिनी के जाल में फंसकर अपना घर गिरवी रखकर उसे पाँच हजार रुपये देता है। लेकिन मोहिनी जब उसे छोड़कर चली जाती है, तब वह राहत महसूस करता है। क्योंकि समाज में ऐसी नारी के साथ रहना वह मौत से बदतर समझता है।

डॉ. चन्द्र के 'बदलते रूप' नाटक में भी आधुनिक समाज की नारी संध्या की स्थिति का चित्रण है। आधुनिक संध्या अपने पति की परवाह किए बिना अपने कॉलेज के मित्र रविंद्र के साथ स्वच्छंद विहार करती है और रंगेलियाँ मनाती हैं, परिणाम स्वरूप उसका पति प्रदीप भी स्वेच्छाचारी और शराबी बन जाता है। इस नाटक की दूसरा नारी पात्र रीता है, वह स्वभाव से शांत और मर्यादित है, वह समाज की पारिवारिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन उसके विपरीत पति स्वेच्छाचारी और शराबी है। उसका पति मनोज उसके इस स्वभाव का फायदा उठाता है, उसके जेवर बेचकर शराब पीता है। उसे शारीरिक रूप से भी प्रताड़ित करता है। रीता तब अपनी यह बात संध्या को बताती है तब संध्या उसे सलाह देते हुए कहती है कि "जो वे पसन्द नहीं करते, वही सब तो अब तुम्हें करना है। घर की चार दीवारी में बंद रहने के कारण ही तो नारी अत्याचार सहती है।"[६] रीता परम्परावादी अन्य भारतीय नारियों के समान अपने पति के अत्याचारों को सहन करते हुए यातनाओं को सहन करती है।

डॉ. चन्द्र के 'भूमि की ओर' नाटक में भी समाज की दो अलग–अलग वर्ग की नारियों का चित्रण है। इस नाटक का जगदीश नौकरी करने हेतु जब शहर चला जाता है तब उसकी पत्नी अपने सात बच्चों को पालने–पोसने का काम करती है। इतना ही नहीं जगदीश का छोटा भाई कैलाश अपनी माँ समान भाभी को मार–पीट करता है। नाटककार ने नारी का चित्रण बड़े ही दयनीय रूप में किया है। जगदीश की साली पूर्णिमा तो एम.एस्सी. की पढ़ाई पूरी करने के बाद शहर में नौकरी करने के बजाय गाँव के विकास का दृढ़ संकल्प करती है। वह कहती है,"मैं कुछ भी कठिण नहीं मानती। जब वे अपने हित देखेंगें, तब स्वयं ही मेरी बातों पर ध्यान देंगें। देखियेगा थोड़े ही दिनों में मैं इस गाँव की काया पलट दूँगी। इसे एक आदर्श गाँव बना दूँगी।"[७] पूर्णिमा लड़की होने के बावजूद भी गाँव को अपने हाथ में लेती है। गाँव के लोगों में प्रेम और सहयोग का भाव पैदा करती है। सहकारी खेती क्रियान्वित करती है। भारत का विकास गाँवों से हो सकता है लेकिन मिट्टी से सोना उगाने के लिए देश के शिक्षितों को अपने हाथों में मिट्टी उठाने का संदेश वह देती है।

डॉ. चन्द्र के 'आकाश झुक गया' नाटक में दो प्रमुख नारी पात्र वासनाकुमारी और प्रेमकुमारी है। जो क्रमश: वासना और प्रेम के प्रतीक है। वासनाकुमारी आधुनिक अवसरवादी, ऐश्वर्यभोगी पथ–भ्रष्ट युवतियों के चरित्र को चरितार्थ करती है और स्वामी युगानन्द के साथ पूरे समाज को पथभ्रष्ट बनाने की सक्रिय भूमिका अदा करती है। वर्तमान युग के इस ऐहिक आनन्द की सशक्त धुरी वासनाकुमारी है। वह अपने सुख के लिए युगानन्द से जुड़ती है लेकिन एकरस जिन्दगी उसे पसन्द नहीं है। वह भोगीलाल से कहती है, "मैं तो लाईफ में चेंज चाहती हूँ। इकहरी लाईफ मुझे पसन्द नहीं है।"[८] वह एकरस जिन्दगी से ऊबकर भोगीलाल के साथ भाग जाती है। इस नाटक में दूसरा नारी चरित्र प्रेमकुमारी का है। वह पहले संतुलित जीवन की पक्षधर है लेकिन जब प्रेम में धोखा खा जाती है, तब स्वामी युगानन्द से जुड़कर भौतिकता की ओर आकृष्ट हो जाती है। एक बार पुन: विद्याभूषण के साथ जीवन निर्वाह करने लगती है। लेकिन स्वामी युगानन्द के मठ में लौट आने के बाद मैं का मंत्र अपनाकर

CamScanner

वासनाकुमारी का स्थान लेती है। इस नाटक के दोनों नारी चरित्र वर्तमान समाज के भौतिकवादी मनोवृत्ति के पोषक हैं।

डॉ. चन्द्र के 'कुत्ते' नाटक में नौकरी पेशा वर्तमान नारी की स्थिति का चित्रण है। इस संदर्भ में डॉ. चन्द्र ने लिखा है, "निम्न–मध्यमवर्गीय नौकरी पेशा नारी की वर्तमान स्थिति का चित्रण ही इस नाटक की मूलवृत्ति है।"[१०] इस नाटक में मिस आभा और मिस राका यह दो नारी चरित्र हैं। मिस आभा उस वर्ग की प्रतिनिधि है, जो परिवार का भरणपोषण करने के लिए अपनी इज्जत की रक्षा करती हुई चालाकी से नौकरी करती है। उसे कार्यालय के कामुक कुत्तों से संघर्ष भी करना पड़ता है। अपने कार्यालय के अधिकारी मि. कपूर की अपने प्रति बुरी नजर को भांपकर वह हेड़क्लर्क मि. बोरकर को बढ़ावा देती है। कपूर और बोरकर एक–दूसरे के प्रतिद्वंद्वि बन जाते हैं। वह किसी के चंगुल में नहीं फंसती अधिकारियों के विषय में यह कहती है, "इन कुत्तों को यदि बहुत पुचकारोगी तो मुँह चाटेंगें और यदि ज्यादा दुतकारोगी तो नुकसान पहुँचाएँगें। इन्हें बस 'तु' और 'धत' में बहलाकर रहो भूखे कुत्ते हैं, इन्हें रोटी से ज्यादा मांस प्रिय है। मांस का टुकड़ा दूर से दिखाओ बस पूंछ हिलाते रहेंगे।"[११] इस प्रकार डॉ. चन्द्र ने आभा के चरित्र के माध्यम से वर्तमान समाज की नारी समस्या का एक सहज निदान प्रस्तुत किया है। नाटक में आभा का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी बड़ा मार्मिक है। वह अपने पिता के कार्यमुक्त होने के बाद, तीन छोटे भाइयों के लिए अपनी आकांक्षाओं को मारकर जीवन सुख त्याग कर देती है। अपने प्रेमी को भी इन्कार कर देती है। वह ऊपर से दृढ़ और दुरूस्त जरूर है लेकिन अन्दर से टूटी हुई नारी है। इस नाटक का दूसरा नारी चरित्र राका है। वह समाज की उन लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो कार्यालयों में आज की नौकरी के माहोल में अपने को अजनबी महसूस करती है और मिसफिट पाती है। राका बहुत आकर्षक रंग–रूप की है, उसके बॉस मि. चड्ढा उसके साथ गंदी हरकतें करतें हैं। एक दिन जब वे राका का हाथ पकड़ते हैं, तो वह चीखती हुई हाथ छुड़ाकर बाहर आती है। आभा उसे बहुत समझाती है युक्तियों से काम लेने को प्रेरित करती है लेकिन राका कहती है, "मेरा पूरा परिवार बरबाद हो जाए, पर मैं यह सब नहीं कर सकती।"[१२] अन्ततः वह चड्ढा की हरकतों से तंग आकर नौकरी से इस्तीफा देती है। ऊपर से मुस्कराने और अपने को सुसज्जित रखनेवाली महानगरीय नारी, भीतर से अत्याधिक खोकली और संत्रस्त है। वह अपनी अन्तहीन यात्रा में गहन टूटन का अनुभव कर रही है।

'भस्मासुर अभी जिन्दा है' नाटक में डॉ. चन्द्र ने समाज की ऐसी नारी का चित्रण किया है जो समाज में निरूपाय, निस्सहाय तथा मजबूर है। वह आधुनिक भस्मासुर रूपी नेताओं से अपनी इज्जत नहीं बचा पाती। मजबूरी में उसे लालमणि के घर हाजिरी देनी पड़ती है। धीरजा (आहिल्या) कॉलेज की शिक्षिका है, फिर भी मजबूर है। वह उस संस्था में नौकरी करती है, जिस पर विधायक लालमणि का वर्चस्व है। वह उसके लिए भाषण तैयार करती है, उसके हर काम में अपना योगदान देती है फिर भी लालमणी से उसे धौंस सुननी पड़ती है, "नौकरी करना है तो घर का मोह त्यागना होगा।"[१३] धीरजा अहल्या के समान पत्थर होकर सब कुछ स्वीकार करती है। धीरजा समाज की उन नारियों के वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो आज की पढ़ी–लिखी नारी होकर भी घर–परिवार की उदरपूर्ति हेतु मजबूरी में सब कुछ सहती है। खुद को निःस्सहाय पाकर समाज के भस्मासुरों को अपना सर्वस्व सौंप देती है।

'अक्षयवट' नाटक में डॉ. चन्द्र ने समाज की दो अलग–अलग वृत्तियों के नारियों का चित्रण किया है। 'अक्षयवट' की पात्र सुभाषिणी समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो प्रेमिका और गृहणी वर्ग है। तो दूसरी नारी विचक्षण समाज के चतुर और कुटनीतिज्ञ वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। सुभाषिणी चाणक्य की प्रेमिका है। वह चाणक्य के विश्वास को खंड़ित नहीं होने देती। राष्ट्रीय संघर्षों और योजनाओं में उलझने के कारण चाणक्य उससे मिल नहीं पाता। इस बीच पिता की मृत्यु के बाद सुभाषिणी अकेली और आश्रयहीन हो जाती है। इस समय वह अपनी व्यथा कहती है कि "क्या करूँ? राक्षस का कहना है, विवाह कर लो। किससे विवाह कर लूँ? क्या विष्णु से अपने को अलग कर लूँ? विष्णु के साथ विश्वासघात तो न होगा? पर उन्हें भी मेरी ओर ध्यान देना चाहिए। क्या सब दायित्व मेरे ही ऊपर है?"[१४] उस समय राक्षस उसे आश्रय देता है और सुभाषिणी राक्षस से विवाह करती है। वह चाणक्य की प्रेमिका होने के बावजूद भी विवाह के पश्चात् अपना पति धर्म निभाते हुए उसकी सच्ची पत्नी बनकर रह जाती है। विचक्षणा एक अलग वृत्ति की नारी है। वह राजमहल की अनुचारी है। वह बड़ी चतुर और कुटनीतिज्ञ है। नन्द को मृत्युदण्ड़ देने पर शटकार उसे बचाता है, तो वह नन्द का प्रतिशोध लेने कि लिए चाणक्य का साथ देती है और नन्द के पूरे परिवार को भोजन में विष दिलाकर पूरे परिवार का विनाश करती है। इस प्रकार 'अक्षयवट' नाटक में डॉ. चन्द्र ने विचक्षणा को समाज की भेदक नारी के रूप में चित्रित किया है।

'लड़ाई जारी है' नाटक में डॉ. चन्द्र ने विन्नी को रेखांकित किया है, जो आधुनिक युवतियों के वर्ग की प्रतिनिधि है। विन्नी नेता की लड़की है। उसका लालन–पालन बड़े लाड़–प्यार से हुआ है। वह आधुनिक विचारों

CamScanner

की लड़की है। विवाह के मामले में वह पूरानी परम्पराओं का विरोध करती है। विवाह में दहेज देना उसे कदापि मान्य नहीं है। वह समाज में नारी के लिए शिक्षा और आत्मनिर्भरता आवश्यक मानती है। वह विकास से कहती है, "जब अशिक्षित है, तब तक कुछ नहीं हो सकता। जब नारी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो जायेगी, तो दहेज प्रथा अपने आप खतम हो जायेगी।"[१५] इस प्रकार 'लड़ाई जारी है' नाटक में विन्नी के माध्यम से नारी शिक्षा के कारण आये बदलाव का चित्रण किया है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त विवेचन से निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को समान दर्जा नहीं मिला, उसकी अवहेलना होती गयी। लेकिन अपने त्याग और बलिदान की भावना से नारी ने सबको प्रभावित किया। धीरे–धीरे समय परिवर्तन के साथ नारी में काफी परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय नारी में शिक्षा के कारण पर्याप्त परिवर्तन आया। पुरुषों का उसकी ओर देखने का दृष्टिकोण बदल गया। उसका कार्यक्षेत्र बढ़ गया। घर की चार दीवारों को लांघकर नारी कला, वाणिज्य, राजनीति, जनसंचार, चिकित्सा, आंतरिक्ष आदि क्षेत्रों में पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर कार्य करने लगी। वह स्वतंत्रता की हिमायती है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव उसके सोच–विचार पर इतना पड़ा कि उसके पारिवारिक, सामाजिक मूल्य बदल गये। अनुशासनहीन होकर स्वच्छंद रूप से जीवन जीने लगी है। डॉ. चन्द्र के उपर्युक्त नाटकों में नारी जीवन के विविध आयामों, स्थितियों एवं समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है।

संदर्भ–

१.समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप,डॉ. घनश्याम भुतड़ा,पृ. ६०
२.महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ,डॉ. शीलप्रभा वर्मा,पृ.१७
३.समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप, डॉ. घनश्याम भुतड़ा,पृ. ११०
४. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में नारी की दशा और दिशा, डॉ. मीना पंडया, पृ. ३०
५. बदलते रूप (भावना के पीछे), डॉ. चन्द्र, पृ. १२
६. बदलते रूप (शादी का चक्कर), डॉ. चन्द्र, पृ. ६६
७. बदलते रूप, डॉ. चन्द्र, पृ. ६६
८. भूमि की ओर, डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ल, पृ. ६५
९. चार प्रयोगशील रंग नाटक (आकाश झुक गया), डॉ.सुरेश चन्द्र शुक्ल, पृ. ४७
१०. चार प्रयोगशील रंग नाटक (कुत्ते), डॉ. चन्द्र, पृ.१०
११. चार प्रयोगशील रंग नाटक (कुत्ते), डॉ. चन्द्र, पृ. २३
१२. वही, पृ. ४३
१३. चार प्रयोगशील नाटक (भस्मासुर अभी जिन्दा है), डॉ. चन्द्र, पृ. ३५
१४. अक्षयवट, डॉ. चन्द्र, पृ.७२
१५. चार प्रयोगशील रंग नाटक (लड़ाई जारी है), डॉ. चन्द्र, पृ. २१

CamScanner